Semester-1 MEd - 2025-2027

(use and impact of Emotional intelligence)

संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग एवं प्रभाव

संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध भावी जीवन, सफलता एवं सम्पन्नता से है। व्यक्तिगत जीवन में यह बुद्धि का विकास होना आवश्यक है। यह प्रत्यक्ष का सम्बन्ध कैरियर की सफलता से अधिक माना जाता है। विद्यार्थियों के प्रतिभाशाली ग्रेडों से भावी जीवन की सफलता के सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता है। और न ही भावी जीवन की सफलता के सम्बन्ध में निश्चित भी नहीं होते है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के शोध संस्थानों के अध्ययन में पाया गया कि प्रवेश परीक्षा के प्राप्तांकों का सामान्य बुद्धिलब्धि का भावी कैरियर की सफलता से कोई सम्बन्ध नहीं है जबकि उनका संवेगात्मक बुद्धि का भावी कैरियर से सार्थक सम्बन्ध पाया गया है। जिससे संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं प्रभावशीलता का बोध होता है। कैरियर निर्देशन में संवेगात्मक बुद्धिलब्धि के आधार पर मार्गदर्शन का चयन करते है उनमें से अधिकांश लोग अपने कैरियर में सफल रहते है। जो सामान्य बुद्धिलब्धि वाले व्यक्ति तीन वर्ष तक कार्य में करता है वही उच्च संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व्यक्ति छः माह में कर लेता है।

संवेगात्मक बुद्धि का मापन - थर्स्टन ने प्राथमिक मानसिक योग्यता का प्रतिपादन किया जिसमें प्राथमिक योग्यताएं शाब्दिक, संख्यात्मक, तार्किक, स्थान बोध, शब्द प्रवाह स्मृति को महत्व दिया गया। गिलफोर्ड ने 120 योग्यताओं का वर्णन किया शोध अध्ययनों द्वारा बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया।

बुद्धि लब्धि के आधार पर मौखिक उपलब्धियों का पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है। इसके आधार पर किस सीमा तक व्यावसायिक निष्पादन तथा व्यक्तिगत सफलता से वास्तविक सह-सम्बन्ध नहीं भी पाया गया, इस सन्दर्भ में योग्यता व्यर्थ ही प्रतीत होता है। भावी जीवन की सफलता के पूर्व अनुमान के समीकरण में संवेगात्मक बुद्धि का अभाव होता है। इस तथ्य को डेनियल गोलमैन ने वर्ष 1995 में अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है। जो अनेक वैज्ञानिकों के शोध कार्यों के निष्कर्षों पर आधारित है। मनोवैज्ञानिकों का ऐसा मानना है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धिलब्धि वाले व्यक्तियों का जीवन अधिक सफल होता है। संवेगात्मक बुद्धि वाले या सामान्य बुद्धिलब्धि वाले व्यक्ति जीवन में अधिक सफल नहीं हो पाते हैं।

संवेगिक बुद्धिमत्ता के तत्वों को सफलता के मार्गों में बाँटा गया है।

(क) वैयक्तिक तत्व,

(ख) अन्तर्वैयक्तिक तत्व.

1. स्वानुभूति – (Empathy)
2. दृढ़ता – (Perseverance)
3. आत्म अभिप्रेरणा –
4. नेतृत्व क्षमता का विकास –
5. लचीलापन/सहनशीलता क्षमता –
6. सामाजिक क्षमता का विकास –
7. कार्य स्थल पर सफलता –
8. तनाव का प्रयोग –
9. विचार सहयोग की भावना का विकास –

Teacher's Signature: P.K. 01/11/25